मुक्त शैक्षिक संसाधन

(पहला खंड)

विषय : हिन्दी[3] **कक्षा - आठवीं**

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय।

अरविन्द शर्मा : सहायक प्रोफेसर, बी बरुवा महाविद्यालय, गुवाहाटी।

डॉ० अन्जलि काकति : वरिष्ठ व्याख्याता, हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उत्तर गुवाहाटी

विष्णु कमल तामुली : व्याख्याता, हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उत्तर गुवाहाटी

शुवला दत्त शइकीया : एस.सी.ई.आर.टी., असम।

सम्पादना :
शुवला दत्त शइकीया
डॉ० अन्जलि काकति
विष्णु कमल तामुली

ग्रुप-लीडर :
शुवला दत्त शइकीया, एस. सी. इ. आर. टी., असम

पुनरीक्षण : **डॉ. अच्चुत शर्मा**

अलंकरण : **विष्णु कमल तामुली**
राजनाथ पाल

डी.टी.पी. :
सुरेन रामसियारी

समन्वयक :
पार्ले फरिजा उमे कुलसुम, एस.पी.ओ (आई.ई.)
एस.एस.ए., असम
वीथिका शइकीया, प्रोग्राम एसोसिएट (आई.ई.)
एस.एस.ए., असम

मुक्त शैक्षिक संसाधन (हिन्दी)

अधिगम के परिणाम की प्राप्ति हेतु अपनायी जानेवाली शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया

कक्षा - आठवीं

अधिगम के परिणाम	सामग्री	शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ	प्रश्नावली	मूल्यांकन
(क) कहानी और निबंध/ लेख के श्रवण, पठन का सम्यक् ज्ञान प्राप्त होगा।	कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि से संग्रहित और टेप-रिकार्डार की ऑडियो-विडियो क्लिप, फुटेज आदि।	निरीक्षण एवं क्रिया-कलाप आधारित।	(i) नैतिकता की सीख देनेवाली एक कहानी को संक्षेप में सुनाओ। (ii) पठित निबंध 'भारत-दर्शन' का सस्वर पठन प्रस्तुत करों, आदि।	सतत
(ख) हिन्दी में कहानी, निबंध/लेख, डायरी आदि कैसे लिखा जाए उसकी जानकारी प्राप्त होगी।	प्रतिष्ठित लेखकों की कहानी, निबंध, डायरी आदि के नमूने।	क्रिया-कलाप आधारित	(i) अपनी पसंद के अनुसार एक हिन्दी कहानी लिखिए। (ii) भारतवर्ष के किसी दर्शनीय स्थान पर एक संक्षिप्त निबंध प्रस्तुत करो, आदि।	मूल्यांकन और
(ग) हिन्दी व्याकरण की सामान्य जानकारी के अंतर्गत विशेषणों का प्रयोग रचना के आधार पर वाक्यों के प्रकार और शुद्ध वाक्य के प्रयोग संबंधी ज्ञान मिलेगा।	विशेषण के विविध भेदों, वाक्यों के अलग-अलग प्रकारों और अशुद्ध व शुद्ध वाक्यों की अलग-अलग सूचियाँ।	क्रिया-कलाप आधारित	(i) विशेषण के भेदों को सोदाहरण स्पष्ट करो। (ii) सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्र वाक्य की उदाहरण सहित परिभाषा प्रस्तुत करो, आदि।	सावधिक
(घ) सम्बद्ध पाठों के आधार पर पड़ोसी के साथ, उचित व्यवहार भारतीय संगीत और भारतवर्ष के दर्शनीय स्थलों के बारे में जानकारी प्राप्त होगी।	भारतवर्ष का मानचित्र, विभिन्न वाद्य यंत्रों और विविध नृत्यों के चित्र।	निरीक्षण एवं क्रिया-कलाप आधारित	(i) भारत के प्रमुख किन्हीं दो दर्शनीय पर्यटन स्थलों के बारे में बताओ। (ii)बरगीत किस प्रकार के गीत हैं? इसकी रचना किसने की थी? लिखिए । (iii) अपने परिचितजनों , पड़ोसियों के प्रति हमारा क्या व्यवहार होना चाहिए लिखो, आदि।	मूल्यांकन

विगत गुणोत्सव के दौरान विद्यार्थियों में निबंध के श्रवण, पठन, कथन और लेखन के संदर्भ में समग्रतः कमी पायी गयी। साथ ही शुद्ध वाक्य लेखन संबंधी कमी भी मिली। इन कमियों के दूरीकरण हेतु यह संसाधन-इकाई प्रस्तुत है।

अधिगम के परिणाम :-

- ⇨ प्रस्तुत संसाधन-इकाई के अधिगम से हमें हिन्दी गद्य साहित्य की एक अन्यतम विधा 'निबंध' की सम्यक् जानकारी प्राप्त होगी।
- ⇨ इसके अलावा शुद्ध वाक्य-लेखन का ज्ञान भी प्राप्त होगा।

अधिगम के परिणाम के उप-क्षेत्र :

- ⇨ इस संसाधन-इकाई के जरिए निबंधात्मक पाठ के श्रवण, पठन, कथन और लेखन संबंधी सम्यक् ज्ञान के अलावा साहित्य की इस लोकप्रिय विधा से जुड़ा हुआ कलात्मक आनन्द भी मिलेगा।
- ⇨ किसी परिचित विषय पर निबंध लिखने की प्रेरणा प्राप्त होगी।
- ⇨ सम्बद्ध पाठ के अध्ययन से भारतीय संगीत (गीत, वाद्य और नृत्य) के बारे में सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।

सन्दर्भ पाठ :

छठाँ पाठ-'भारतीय संगीत की एक झलक' (निबंध) महीना- अप्रैल

प्रस्तावना :

असम के अहिन्दी माध्यम के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में सरकारी त्रि-भाषा सूत्र के अनुसार कक्षा छठी से लेकर आठवीं तक तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी का पठन-पाठन होता है। वस्तुतः इस मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER) (हिन्दी) की प्रस्तुति के पीछे शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या नीति-2005 तथा असम सरकार द्वारा आयोजित विगत गुणोत्सव के परिणाम का आधार है। प्राथमिक स्तर पर भाषा सीखने-सिखाने के संबंध में यह एक जरूरी बात है कि बच्चे विभिन्न प्रकार के परिचित और अपरिचित संदर्भों के अनुसार भाषा का सही प्रयोग कर सकें। वे सहज, कल्पनाशील, प्रभावशाली और व्यवस्थित ढंग से किस्म-किस्म के लेखन कर सकें। वे भाषा को प्रभावी बनाने के लिए सही शब्दों का प्रयोग कर सकें। यह भी जरूरी है कि पढ़ना, सुनना, लिखना और बोलना-इन चारों प्रक्रियाओं में बच्चे अपने पूर्वज्ञान की सहायता से अर्थपूर्ण वाक्यों की रचना कर पाएँ और कही गई बात के निहितार्थ को भी पकड़ पाएँ। पढ़ना, पढ़कर अर्थ सहित समझना, दूसरों को उसके बारें में बोलना तथा अपनी तरफ से लिखना ये शिक्षण-प्रक्रिया के अंग हैं।

उच्च प्राथमिक स्तर पर विभिन्न स्थितियों के संदर्भ में अपने आप को लिखित रूप में अभिव्यक्त करना अत्यन्त जरूरी है और यह बात और अधिक दृढ़ हो जानी चाहिए और लेखन का उद्देश्य भी यही है। उच्च प्राथमिक स्तर पर यह अपेक्षा भी रहती है कि शिक्षार्थी विभिन्न रचनाओं को पढ़कर उनमें झलकने वाली सोच, विषयवस्तु और सरोकार आदि को पहचान पाएँ। कुल मिलाकर प्रयास यह होना चाहिए कि इस चरण के पूरे होने तक शिक्षार्थी-किसी भाषा, व्यक्ति, वस्तु, स्थान संबंधी रचना आदि का विश्लेषण करने, उसकी व्याख्या करने और उस व्याख्या को स्पष्टता के साथ अभिव्यक्त करने में अभ्यस्त हो जाएँ। वे रचनात्मक और सर्जनात्मक ढंग से भाषा को प्रयोग में लाना सीख जाएँ।

गुणोत्सव की समीक्षा के बाद यह देखने को मिला कि 'भारतीय संगीत की एक झलक' पाठ के आधार पर शुद्ध वाक्य के प्रयोग पर किए गए प्रश्न-संख्या 40, Set-A में केवल 27.05 प्रतिशत विद्यार्थी ही वाक्य के शुद्ध रूप को पहचान पाए। अत: विषयवस्तु को पढ़ाने के साथ-साथ उन्हें आवश्यक व्यावहारिक व्याकरणिक ज्ञान भी देना होगा। व्याकरण-शिक्षण का मूल उद्देश्य ही है शुद्ध शब्दों और शुद्ध वाक्यों के प्रयोग का शिक्षण।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई को सीखने-सिखाने का महत्व :

सम्बद्ध निबंध बच्चों के लिए एक महत्वपूर्ण पाठ है। 'भारतीय संगीत की एक झलक' पाठ व्यावहारिक क्षेत्रों में हिन्दी भाषा के ज्ञान का विकास करता है। विद्यार्थियों को अपनी और देश तथा स्थानीय संस्कृति के साथ-साथ पड़ोसी की भाषा-संस्कृति के प्रति भी जागरूक और श्रद्धाशील बनाता है। इस पाठ में राष्ट्रीय समन्वय, परंपरा तथा साम्प्रदायिक -ऐक्य पर विशेष ध्यान दिया गया है। प्रस्तुत संसाधन-इकाई के जरिए इस पाठ को रोचक तरीके से सीखने-सिखाने के कौशल का ज्ञान प्राप्त होने के अलावा शुद्ध वाक्य के प्रयोग की जानकारी भी मिलेगी।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई से हम क्या-क्या सीख पाएँगे :

- ⇨ किसी निबंधात्मक रचना को सुनकर अथवा पढ़कर उस पर गहन चर्चा करना।
- ⇨ अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना।
- ⇨ प्रश्न पूछना।
- ⇨ पढ़ने की क्षमता को बढ़ाना।
- ⇨ हिन्दी बोलने की क्षमता को बढ़ाना।
- ⇨ पाठ आधारित सामान्य व्याकरण के अंतर्गत शुद्ध वाक्य के प्रयोग का ज्ञान प्राप्त करना।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए शिक्षक क्या-क्या करेंगे- (परिकल्पना) :

- ⇨ अध्यापक सरल रूप में कक्षा के विद्यार्थियों को पाठ में निहित भाव और संदेश को समझाएंगे और लिखवाएंगे भी।
- ⇨ शुद्धता से आवश्यक व्याख्या करेंगे, प्रश्न पूछेंगे और उनका हल बताएंगे।
- ⇨ विद्यार्थियों से अध्यापक सहजता से प्राप्त संगीत से संबन्धित सामग्रियों का संग्रह करवाएंगे और उनके बारे में कहकर सुनाएंगे।
- ⇨ विद्यार्थियों से देश के विभिन्न प्रांतों के नृत्य-संगीत, संस्कृति-संबंधित त्यौहारों के बारे में प्रश्न करेंगे।
- ⇨ अध्यापक विद्यार्थियों के लेखन-कौशल के विकास के लिए शुद्ध शब्द और वाक्य के प्रयोग के बारे में व्याकरण का व्यावहारिक ज्ञान देंगे।
- ⇨ अध्यापक व्याकरणिक दिशाओं पर महत्व देकर विद्यार्थियों को वाक्य-रचना की पद्धति से परिचित कराएंगे।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए आवश्यक शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ :

क्रिया-कलाप-1 :

सबसे पहले अध्यापक प्रस्तुत पाठ 'भारतीय संगीत की एक झलक' को श्रुति मधुरता के साथ वाचन करेंगे। विद्यार्थी एकाग्रता के साथ उसे ध्यानपूर्वक सुनेंगे। बाद में अध्यापक पाठ में निहित संदेश को भली-भाँति इसके तात्पर्य सहित विद्यार्थियों को बतायेंगे। आवश्यकता के अनुसार अध्यापक विद्यार्थियों से भी पाठ का वाचन करवाएंगे, मौन वाचन भी करवायेंगे। फिर उनको दलों में विभाजित करते हुए वही पाठ कक्षा में वे पुन: उन्हीं से पढ़वायेंगे। बाकी बच्चे ध्यानपूर्वक उसे सुनेंगे।

सम्बन्ध पाठ के कमजोर क्षेत्र के रूप में चिह्नित व्याकरणिक गलतियों को सुधारने का प्रयास करेंगे। इसके लिए

अध्यापक पाठ में आए कुछेक वाक्यों को लेकर वाक्य के विभिन्न अंगों जैसे- कर्ता, कर्म, क्रिया के वाक्य के साथ संबंध व महत्व के बारे में ज्ञान-प्रदान हेतु प्रयास करेंगे।

आइए, हम सब सीखें :

⇨ विद्यार्थी प्रस्तुत पाठ को ध्यान और एकाग्रता से सुन रहे हैं या नहीं ?

⇨ पाठ उनके लिए मनोग्राही हुआ या नहीं।

⇨ पाठ को शुद्धता के साथ वे पढ़ पाये या नहीं ?

⇨ पाठ की अंतर्निहित मूल शिक्षा को वे समझ पाये या नहीं ?

क्रिया-कलाप-2 :

(प्रस्तुत पाठ का अनुशीलन)

अध्यापक पाठ से संबन्धित कुछ प्रश्नों के द्वारा विद्यार्थियों को पाठ का सम्यक् ज्ञान देने का प्रयास करेंगे। जैसे -

प्रश्न : **1.** भूपेन हाजरिका कौन हैं ?

प्रश्न : **2.** भारतीय संगीत की शुरूवात कब हुई थी ?

प्रश्न : **3.** दक्षिण भारतीय संगीत क्या है ?

प्रतिफलन :

⇨ निबन्ध को पढ़कर विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर तैयार करेंगे। (लिखित या मौखिक)

⇨ लिखने और बोलने में गलतियाँ नजर आयेंगी। होने वाली गलतियों को सुधार देने से उनमें सुधार होंगे।

⇨ इस प्रकार विद्यार्थी प्रश्नों के जवाब ढूँढ़ने के लिए मन से पूरे पाठ को पढ़ेंगे और कक्षा से जुड़े रहेंगे।

⇨ अपनी ज्ञान-बुद्धि से सही-गलत का निर्णय कर पायेंगे।

पाठ-आधारित व्याकरण शिक्षण :

चूँकि तीसरी भाषा हिन्दी के विद्यार्थियों के लिए आठवीं कक्षा में व्याकरण की अलग पाठ्य पुस्तक की व्यवस्था नहीं है, अत: सभी पाठों के साथ व्याकरण-शिक्षण की भी व्यवस्था है। शिक्षक-शिक्षिकागण अपने अनुभव से विद्यार्थियों के व्याकरणिक ज्ञान बढ़ाने का प्रयास करेंगे।

इस पाठ में भाषा-अध्ययन की दृष्टि से वाक्यों की रचना पर ज्ञान देने का प्रयास किया जा रहा है।

विगत गुणोत्सव के दौरान 'शुद्ध वाक्य-लेखन' ही कमजोर क्षेत्र बन गया है अत: अध्यापक को वाक्यों की रचना के बारे में पर विशेष रूप से सिखाना और समझाना पड़ेगा।

इसके लिए अध्यापक वाक्य के विभिन्न अंगों, जैसे- कर्ता, कर्म, क्रिया के वाक्य के साथ संबंध व महत्व के बारे में ज्ञान-प्रदान हेतु वाक्यो की सूची तैयार करेंगे।

क्रिया-कलाप-3 :

अभ्यास-तालिका-1

1. मोहन भात खाता है।

2. गीता भात खाती है।

3. हम भात खाते हैं।

इन तीनों वाक्यों में कर्ता और मुख्य क्रिया पद हैं।

1. **कर्ता** – मोहन, गीता, हम।
2. **क्रिया** – खाता, खाती, खाते।

ध्यान देने की बात है कि – कर्ता यदि पुंलिंग में हो, तो क्रिया भी उसी के अनुसार प्रयुक्त होती है, जैसे– 'मोहन – खाता'; कर्ता यदि स्त्रीलिंग में हो तो उसी के अनुसार क्रिया का प्रयोग होता है – जैसे– गीता खाती। इसका कारण है– वाक्य में 'मोहन' कर्ता और मोहन पुलिंग– उसी के अनुरूप क्रिया 'खाता' हुआ और 'गीता' कर्ता लेकिन स्त्रीलिंग – उसीके अनुसार क्रिया 'खाती' है। तीसरे वाक्य में कर्ता 'हम' पुलिंग बहुवचन में है कि– अत: क्रिया के रूप में 'खाते' है।

अत: देखा गया कि – कर्ता और क्रिया का संबंध है। कर्ता के अनुसार ही क्रिया का प्रयोग होता है।

अभ्यास-तालिका-2

1. हरि ने भात खाया।
2. हरि ने रोटी खाई।
3. गीता ने भात खाया।
4. गीता ने रोटी खाई।

इन चारों वाक्यों में कर्ता हरि और गीता हैं और क्रिया 'खाया' और 'खाई' हैं। इन वाक्यों में कर्म हैं–भात और रोटी। इन वाक्यों में कर्ता पुलिंग अथवा स्त्रीलिंग हो इसका कोई अंतर नहीं है– क्रिया–पद केवल कर्म के अनुसार ही प्रयुक्त हुआ है। पहले वाक्य में क्रिया–पद कर्म 'भात' के पुलिंग होने के कारण 'खाया' हुआ है। दूसरे वाक्य में क्रिया 'खाई' हुई है– इसका कारण कर्म 'रोटी' स्त्रीलिंग है– अत: इसी के अनुसार क्रिया का प्रयोग हुआ है। शेष वाक्यों में भी वही कर्म के अनुसार क्रिया का प्रयोग हुआ है।

अत: देखा गया कि – कर्ता के साथ 'ने' जुड़े होने की स्थिति में वाक्य में क्रिया कर्म के अनुसार ही प्रयुक्त हुई। है।

इन दोनों क्रिया–कलापों के बाद अध्यापक संबंधित नियम के ऊपर व्याख्या करेंगे और विद्यार्थी ध्यान से सुनेंगे। इसके बाद शिक्षक विद्यार्थियों को दलों में विभाजित करके सामूहिक रूप से प्रश्न पूछेंगे। इससे अध्यापक को मूल्यांकन करने में सुविधा होगी। इस प्रकार अध्यापक सुविधा और समय के अनुसार विद्यार्थियों के वाक्य–लेखन कौशल का विकास करेंगे।

क्रिया-कलाप-4 :

क्षेत्र अध्ययन :-1

माधव दास मरिगाँव उच्च प्राथमिक विद्यालय के हिन्दी विषय पढ़ाने वाले एक हिन्दी शिक्षक हैं। उन्होंने कैसे विद्यार्थियों को पाठ में आये हुए भारतीय संस्कृति के द्योतक तथ्यों को शिखाने का प्रयास किया उसके बारे में उनके अनुभव का वर्णन यहाँ प्रस्तुत है।

उन्होंने विद्यार्थियों के सामने संगीत और नृत्य समन्धी ओडिओ, वीडिओ का प्रयोग करके ज्योति संगीत, विष्णु राभा गीत, भजन, बिहुगीत, बरगीत आदि को सुनाया और कथक नृत्य, सत्रीय नृत्य, बिहुनृत्य आदि दिखाये।

विद्यार्थी ये सब सुनकर–देखकर अधिक आनन्दित हुए और पाठ में निहित मूल विषय का भी ज्ञान प्राप्त किया।

इस प्रकार वे पाठ को अधिक मनोग्राही ढंग से प्रस्तुत करके मूल विषय का ज्ञान देने में सफल हुए।

इस तरीके से हिन्दी शिक्षक–शिक्षिकागण भी सन्दर्भित पाठ का ज्ञान सरलता से दे सकेंगे।

क्रिया-कलाप-5 :

क्षेत्र अध्ययन : 2

रमेन गगै तीनसुकीया के उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक हैं। उन्होंने एक कहानी का अंश लेकर विद्यार्थी को किस प्रकार व्याकरणिक शिक्षा प्रदान की उनके अनुभवों का वर्णन यहाँ प्रस्तुत है।

उन्होंने एक कहानी का छोटा-सा अंश लेकर विद्यार्थियों को समझाने का प्रयास किया-किस प्रकार कर्ता, कर्म और क्रिया के अन्वय के अनुसार वाक्य-गठन होता है। किस प्रकार वाक्य में विराम-चिह्नों का प्रयोग होना चाहिए तथा पढ़ने की गति, लय आदि के कारण से वाक्य अशुद्ध हो सकता है इसके बारे में भी विद्यार्थियों को समझाने का प्रयास किया।

क्रिया-कलाप-6 :

(क) अध्यापक विद्यार्थियों को निम्नप्रकार लेखन क्रियाओं के द्वारा संगत वाक्यों का ज्ञान करा सकेंगे।

निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करो :-

1. रोहन ने पुस्तक ..... (पढ़)
2. गीता ने भात ..... (खा)
3. सेठानी ने राजा से सवाल ..... (कर)
4. राम ने रोटी ..... (खा)

(ख) कहानी का अंश (कहानी के जरिए शुद्ध वाक्य-लेखन सिखाने का प्रयास) :

एक बार एक सैनिक का घोड़ा भागा। वह भी उसके पीछे चिल्लाता हुआ दौड़ा- 'पकड़ो मत, जाने दो'। रास्ते में एक लड़का खड़ा सुन रहा था उसने हो-हो करके शोर मचाकर और तालियाँ बजाकर उस घोड़े को भड़का दिया जिससे वह और भी तेजी से भागकर दूर निकल गया। इतने में वह सैनिक आ पहुँचा। उसने लड़के से पूछा-तुमने घोड़े को पकड़ा क्यों नहीं ? और उसे भगा क्यों दिया ? लड़के ने कहा- तुम्हीं तो कह रहे थे- 'पकड़ो मत, जाने दो।'

कहानी का शुद्ध रूप है :

एक बार एक सैनिक का घोड़ा भाग गया। वह भी उसके पीछे चिल्लाता हुआ दौड़ा- 'पकड़ो, मत जाने दो'। रास्ते में एक लड़का खड़ा सुन रहा था। उसने गलत सुना और हो-हो करके शोर मचाकर और तालियाँ बजाकर उस घोड़े को भड़का दिया, जिससे वह और भी तेजी से भागकर दूर निकल गया। इतने में वह सैनिक आ पहुँचा। उसने पूछा - 'तुमने मेरे घोड़े को पकड़ा क्यों नहीं ? और उसे भगा क्यों दिया ? लड़के ने कहा- तुम्हीं तो कह रहे हो- 'पकड़ो मत, जाने दो।'

इस प्रकार अध्यापक विद्यार्थियों को कहानी सुनाने के बहाने भी वाक्यों के शुद्ध प्रयोग की भात को सिखाने का प्रयास कर सकेंगे।

आइए, हम सब सोचें :

(i) कहानी को सुनकर विद्यार्थीगण उसे समझ पाये या नहीं ?

(ii) विराम-चिह्न के गलत प्रयोग के कारण ही किस प्रकार कहानी में घोड़े को लड़के ने नहीं पकड़ा- वह बात विद्यार्थियों को समझ में आयी या नहीं ?

(iii) 'पकड़ो, मत जाने दो' और 'पकड़ो मत, जाने दो।'– इन दो वाक्यों के अर्थगत अन्तर का बोध विद्यार्थियों को हुआ या नहीं ?

इस प्रकार कि अध्यापक गलत वाक्य, गलत शब्द और गलत विराम–चिह्न आदि के प्रयोग के उदाहरणों के जरिए भी शुद्ध वाक्य लिखने में विद्यार्थियों की सहायता कर सकते हैं।

प्रतिफलन :

(i) अध्यापक अभ्यास–तालिका के सहारे विद्यार्थियों को वाक्य–शुद्धि का ज्ञान देंगे तो विद्यार्थी बेहतर ढंग से समझ पाएंगे।

(ii) शुद्ध वाक्य–रचना के लिए वाक्य के नियमों का पालन जरूरी है। इसके लिए अध्यापक बताएंगे कि वाक्य का गठन करते समय पद–क्रम, अन्वय, लोप और आगम पर ध्यान रखना आवश्यक है।

सारांश :

प्रस्तुत संसाधन–इकाई में निबंध के पठन, श्रवण, कथन और लेखन आदि के संबंध में आवश्यक आलोकपात किया गया है। विद्यार्थियों की आयु तथा स्तर के अनुसार उन्हें भारतीय संगीत (गीत, वाद्य और नृत्य) से संबधित विभिन्न तथ्यों का ज्ञान कैसे दिया जाए उस पर भी विचार किया गया है। साथ ही हिन्दी में शुद्ध वाक्य कैसे लिखे जाएँ– उस पर भी पर्याप्त उदाहरणों के माध्यम से रोशनी डाली गयी है।

संदर्भ ग्रन्थ–सूची :

★ आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना

★ मानक हिन्दी व्याकरण और रचना

★ सरस्वती मानक व्याकरण

★ **TESS India Metarials**

★ **E Pathshala Metarials**

★ **Learning Outcomes at the Elementary Stage by SCERT.Assam.**

सुदृढ़ीकरण :

★ भारतीय संगीत संबंधी अन्य लेखों या पुस्तकों के पठन–मनन से इसके बारे में ज्ञान और बढ़ेगा।

★ शुद्ध वाक्य लेखन का बार–बार अभ्यास करने से इस पर सही अधिकार होगा।

★ पं. कामता प्रसाद गुरु के 'हिन्दी व्याकरण' अथवा 'संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण' की मदद ली जाए तो हिन्दी भाषा पर अपनी गति दृढ़ होगी।

प्रश्न-भण्डार :

(क) गद्य साहित्य की विधाओं में से निबंध का क्या महत्व है ?

(ख) भूपेन हाजरिका के बारे में तुम क्या जानते हो- लिखो।

(ग) भारतीय शास्त्रीय संगीत की कितनी धाराएँ हैं ? ये क्या-क्या हैं ?

(घ) भारतीय संगीत, लधु शास्त्रीय संगीत और आधुनिक संगीत की तुलना करो।

(ङ) चित्रों को देख कर पहचानो-

झुमुर नृत्य बिहु नृत्य

शास्त्रीय नृत्य बागरूम्बा नृत्य

प्रस्तुतकर्ता : **डॉ० अन्जलि काकति,** वरिष्ठ व्याख्याता, हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उत्तर गुवाहाटी

पुनरीक्षण : **डॉ. अच्युत शर्मा,** एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय

अधिगम के परिणाम के कमजोर क्षेत्रों के सुधार हेतु प्रस्तुत मुक्त शैक्षिक संसाधन (हिन्दी)

कक्षा :- आठवीं **विषय :- हिन्दी[3]**

विगत गुणोत्सव के दौरान विद्यार्थियों में निबन्ध के श्रवण, पठन, कथन और लेखन के सन्दर्भ में कमी पायी गयी। साथ ही विशेषण संबंधी व्याकरणिक ज्ञान की कमी भी मिली। इन कमियों के दूरीकरण हेतु यह संसाधन-इकाई प्रस्तुत है।

अधिगम के परिणाम :-

- ⇨ प्रस्तुत संसाधन-इकाई के अधिगम से हमें आठवें पाठ ('भारत दर्शन) निबंन्ध' की सम्यक जानकारी प्राप्त होगी।
- ⇨ साथ ही व्यावहारिक व्याकरण-ज्ञान के अन्तर्गत हमें विशेषण शब्दों का ज्ञान भी मिलेगा।

अधिगम के परिणाम के उप-क्षेत्र :

- ⇨ इस संसाधन इकाई के जरिए विद्यार्थी निबंधात्मक पाठ का श्रवण, पठन, कथन और लेखन संबंधी सम्यक् ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- ⇨ मूल पाठ के अध्ययन द्वारा भ्रमण के महत्व की जानकारी प्राप्त होगी।
- ⇨ मूल पाठ के अधिगम के द्वारा डायरी-लेखन की सामान्य जानकारी मिलेगी।

सन्दर्भ पाठ :

आठवाँ पाठ- 'भारत दर्शन' (निबंध), महीना : मई

प्रस्तावना :

असम के अहिन्दी माध्यम के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में सरकारी त्रि-भाषा सूत्र के अनुसार कक्षा छठी से लेकर आठवीं तक तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी का पठन-पाठन होता है। वस्तुत: इस मुक्त अधिगम संसाधन (हिन्दी) की प्रस्तुति के पीछे शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या नीति-2005 तथा असम सरकार द्वारा आयोजित विगत गुणोत्सव के परिणाम का आधार है। हिन्दी साहित्य की दो प्रमुख विधाएँ हैं- गद्य और पद्य। मूलत: हिन्दी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए हिन्दी उनकी अपनी मातृभाषा नहीं है। फलत: हिन्दी में सुनना, पढ़ना, बोलना और लिखना उन विद्यार्थियों के लिए एक प्रकार से चुनौतीपूर्ण होता है। कभी और कहीं वे हिन्दी को शुद्ध उच्चारण, लय, गति, हाव-भाव आदि के साथ नहीं पढ़ पाते या फिर शिक्षकों द्वारा किए गये पठन को वे समझ नहीं पाते। साथ ही हिन्दी में कथोपकथन भी वे शुद्धता के साथ नहीं कर पाते।

गुणोत्सव के दौरान यह देखने को मिला कि 'भारत दर्शन' पाठ के आधार पर विशेषण के प्रयोग पर किए गए प्रश्न संख्या 37.Set-A में केवल 37.30 प्रतिशत विद्यार्थी ही शुद्ध रूप से विषेषण शब्द को पहचान पाए। अत: विषय वस्तु के बारे में पढ़ाने के साथ-साथ उन्हें आवश्यकीय व्यावहारिक व्याकरणिक ज्ञान की शिक्षा पर भी विशेष ध्यान देना होगा।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई को सीखने-सिखाने का महत्व :

हिन्दी शिक्षण में गद्य-पठन और कथोपकथन अध्यापक और विद्यार्थी दोनों के लिए आवश्यक होने के साथ ही महत्वपूर्ण भी है। हिन्दी गद्य-पठन और हिन्दी कथोपकथन में शुद्धता अपरिहार्य और अनिवार्य है। शुद्ध श्रवण से ही शुद्ध पठन और लेखन सम्भव है। हिन्दी गद्य पठन के विकास के साथ ही हिन्दी में कथोपकथन का विकास होना भी जरूरी है। प्रस्तुत संसाधन-इकाई को इसी हिन्दी गद्य-पठन और हिन्दी में कथोपकथन के विकास को ध्यान में रख कर सजाया गया है। भ्रमण शिक्षा का एक अभिन्न अंग है। भ्रमण से हमें जो अनुभव प्राप्त होता है उसका हमारे जीवन में बहुत महत्व है।

इसीलिए विद्यालयों के विद्यार्थियों को बीच-बीच में शिक्षामूलक भ्रमण में ले जाया जाता है। साथ ही हमारे दैनिक कार्यों में एक अति महत्वपूर्ण कार्य है- 'डायरी लेखन', जिससे रचनात्मक दक्षता भी प्राप्त कर सकते हैं। इस तरह प्रस्तुत संसाधन-इकाई से विद्यार्थियों के साथ हम सभी निबंधात्मक पाठ के पठन, श्रवण और लेखन का महत्व समझ पायेंगे।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई को सीखने-सिखाने का महत्व :

भ्रमण-वृत्तान्तपरक लेख या निबन्ध मनोरंजन के साथ-साथ जानकारी का साधन भी हुआ करता है। स्वाभाविकतया इसके प्रति विद्यार्थी की रुचि और ध्यान रहते हैं। भ्रमण-वृतांत मूलक निबंध या लेख सुनकर विद्यार्थी श्रवण में दक्षता प्राप्त करते हुए शुद्धता से पढ़ने का ज्ञान प्राप्त करते हैं। शुद्ध श्रवण से शुद्ध पठन की सम्प्राप्ति होती है और मनोरंजक तथा ज्ञान देनेवाले बच्चों के उपयोगी निबंध / लेख से वे इसके श्रवण, पठन के अलावा इसपर रचनात्मक दक्षता भी प्राप्त कर सकते हैं। इस तरह प्रस्तुत संसाधन इकाई से विद्यार्थियों के साथ हम सभी निबंध / लेख के पठन, श्रवण और लेखन का महत्व समझ पायेंगे।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई हम क्या-क्या सीख पायेंगे :

- ⇨ किसी निबंधात्मक रचना को सुनकर अथवा पढ़कर उस पर गहन चर्चा करना।
- ⇨ अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना।
- ⇨ प्रश्न पूछना।
- ⇨ पढ़ने की क्षमता को बढ़ाना।
- ⇨ सुनने और बोलने की क्षमता को भी बढ़ाना।
- ⇨ पाठ आधारित सामान्य व्याकरण के अंतर्गत विशेषण शब्दों के प्रयोग का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- ⇨ विद्यार्थी स्वयं, युग्म तथा दलगत रूप में वाक्य के शुद्ध प्रयोग पर चर्चा करेंगे।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए शिक्षक क्या-क्या करेंगे ? (योजना/परिकल्पना) :

- ⇨ अध्यापक नियमित रूप से कक्षा में विद्यार्थियों को उपयोगी निबंधात्मक पाठ सुनाएंगे। इनमें निहित भाव और संदेश को उन्हें समझाएंगे और लिखवायेंगे भी।
- ⇨ शुद्धता से पाठ्य पुस्तक में निर्धारित पाठ का पठन-पाठन करेंगे, साथ ही विद्यार्थियों से भी इसका वाचन करवायेंगे।
- ⇨ निर्धारित पाठ की आवश्यकीय व्याख्या देंगे, प्रश्न पूछेंगे और उनका हल बतायेंगे।
- ⇨ अध्यापक विद्यार्थियों से सहजता से प्राप्त भ्रमणमूलक, वर्णनात्मक लेखों का संग्रह करवायेंगे ओर उन्हें अन्य विद्यार्थियों के सामने पढ़कर सुनायेंगे।
- ⇨ अध्यापक किसी विषय, घटना या नैतिकता की सीख संबंधी विषय पर लेखन का अभ्यास करवायेंगे। इसके लिए वे आवश्यक मार्ग-दर्शन करेंगे।
- ⇨ लेखन अभ्यास से विद्यार्थी की रुचि बढ़ेगी, चिंतन और कल्पना-शक्ति का विकास होगा साथ ही सर्जनात्मक दक्षता बढ़ेगी।
- ⇨ शुद्धता के साथ व्याकरणिक ज्ञान एवं शिक्षा प्राप्त करेंगे और उसी शुद्धता के साथ हिन्दी भाषा का प्रयोग मौखिक तथा लिखित रूप में कर सकेंगे।
- ⇨ विद्यार्थी हिन्दी में किसी भी विषय पर अपने स्तर और सामर्थ्य के अनुसार अभिव्यक्ति देने में सक्षम होंगे।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए आवश्यक शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ :

क्रिया-कलाप-1 :

सबसे पहले अध्यापक प्रस्तुत पाठ 'भारत दर्शन' को श्रुति-मधुरता के साथ वाचन करेंगे। विद्यार्थी एकाग्रता के साथ उसे ध्यानपूर्वक सुनेंगे। बाद में अध्यापक पाठ में निहित संदेश को भली-भाँति इसके तात्पर्य सहित विद्यार्थियों को बतायेंगे। आवश्यकता के अनुसार अध्यापक विद्यार्थियों से भी पाठ का वाचन करवाएंगे, मौन वाचन भी करवायेंगे। फिर उनको दलों में विभाजित करते हुए वही पाठ कक्षा में वे पुन: उन्हीं से पढ़वायेंगे। बाकी बच्चे ध्यानपूर्वक उसे सुनेंगे।

आइए, हम सब सोचें :

⇨ विद्यार्थी प्रस्तुत पाठ को ध्यान और एकाग्रता से सुन रहे हैं या नहीं ?

⇨पाठ उनके लिए मनोग्राही हुआ या नहीं।

⇨ पाठ को शुद्धता के साथ वे पढ़ पाये या नहीं ?

⇨ पाठ के अंतर्निहित मूल संदेश को वे समझ पाये या नहीं ?

क्रिया-कलाप-2 :

इस पाठ में अधिक से अधिक विशेषण शब्दों का प्रयोग हुआ है। अत: अध्यापक विषयवस्तु को पढ़ाने के साथ-साथ विद्यार्थियों के श्रेणीस्तर को ध्यान में रखते हुए उन्हें सामान्य व्याकरण के अंग विशेषण के प्रयोग प्रकार आदि के बारे में ठीक तरह से सिखाएँगे और इसके लिए आध्यापक पाठ में प्रयुक्त विशेषणों से जुड़े चार-पाँच वाक्यों को लेकर क्रिया-कलाप के रूप में उन्हें सिखाने का प्रयास करेंगे। जैसे-

1. माँ ने एक छोटे डब्बे में कुछ जरुरी दवा रखी थी।
2. गरम चटपटे चने खा लिये।
3. स्वच्छ हवा ने हमें काफी राहत दी।
4. विजयवाड़ा भारत का एक बड़ा रेलवे जंकशन है।
5. पेठा आगरा की मशहूर मिठाई है।

अध्यापक लिखित वाक्यों के रेखांकित शब्दों को जोरसे पढ़कर सुनायेंगे और विद्यार्थी ध्यान से सुनेंगे। विद्याथियों को भी एकल रूप में उच्चारण करने देंगे और इनकी विशेषता क्या है उसे समझायेंगे।

क्रिया-कलाप-3 :

अध्यापक अनेक उदाहरणों और गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को विशेषण के प्रकार के बारे में ज्ञान देने का प्रयास करेंगे-

1. बाजार से मीठा आम लाना।
2. मेरे विद्यालय में पंद्रह कमरे हैं।
3. गिलास में थोड़ा दूध है।
4. वह लड़का खेल रहा है।

अध्यापक इन वाक्यों को सही उच्चारण के साथ पढ़ेंगे और विद्यार्थी इसे ध्यानपूर्वक सुनेंगे। इसके बाद शिक्षक विद्यार्थियों से मौन वाचन भी करवायेंगे। फिर उनको दलों में विभाजित करते हुए वाक्यों को कक्षा में पून: उन्हीं से पढ़वायेंगे। बाकी बच्चे ध्यानपूर्वक सुनेंगे।

विशेषण के सही ज्ञान देने के लिए अध्यापक रेखांकित शब्दों के सहारे, जैसे- मीठा आम, पन्द्रह कमरे, थोड़ा दूध, वह लड़का आदि को लेकर विशेषण के प्रकारों को समझाने का प्रयास करेंगे-

ऊपर के वाक्यों में रेखांकित शब्द संज्ञा की विशेषता बता रहे हैं। जैसे -'मीठा' शब्द आम की विशेषता अर्थात् गुण, 'पन्द्रह', शब्द कमरे की विशेषता अर्थात संख्या, 'थोड़ा' शब्द दूध की विशेषता अर्थात परिमाण और 'वह' शब्द लड़के की विशेषता (निर्दिष्टता) बता रहे हैं। ये विशेषण कहलाते हैं। विशेषण के मुख्यत: चार भेद हैं- गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाण वाचक और सर्वनाम वाचक या सार्वनामिक विशेषण।

आइए, हम सब सोचें :

⇨ विद्यार्थी उदाहरणों को ध्यान और एकाग्रता से सुन रहे हैं या नहीं ?

⇨ वाक्यों में प्रयुक्त विशेषण शब्दों के बारे में ज्ञान प्राप्त हो रहा है या नहीं ?

⇨ विशेषण की परिभाषा और संज्ञा के बारे में सही ज्ञान हो रहा है या नहीं ?

⇨ वाक्य में विशेषण का प्रयोग ठीक तरह से कर सकेंगे या नहीं ?

क्रिया-कलाप-4 :

तरुण बरा शिवसागर के एक उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक हैं। अपने विद्यार्थियों को 'विशेषण' का व्याकरणिक ज्ञान देने के लिए वे एक अनुच्छेद के सहारे सिखाने का प्रयास करते हैं। उनकी तरह अध्यापक भी निम्नलिखित अनुच्छेद को सही उच्चारण और गति के साथ पढ़कर विद्यार्थियों से भी वाचन करायेंगे। फिर अध्यापक विद्यार्थियों से मौन वाचन भी करवायेंगे।

इसके बाद अध्यापक विद्यार्थियों से निर्देश करेंगे कि अपनी-अपनी कॉपी निकालकर अनुच्छेद से विशेषण शब्द छाँटकर लिखें। साथ ही किस प्रकार के विशेषण हैं उसका भी उल्लेख करें।

अनुच्छेद इस प्रकार है :

'रोहन एक अच्छा लड़का है। वह मधुर स्वर से गीत गाता है। उसके पास गीतों के बारह संकलन हैं। सरिता भी अच्छी लड़की है। वह बढ़िया नाचती है। उसका नृत्य देखकर लोग मोहित हो जाते हैं। दोनों को कई पुरस्कार भी मिले हैं।'

अध्यापिका/अध्यापक विद्यार्थियों को दलों में विभाजित करते हुए वही अनुच्छेद कक्षा में पुन: उन्हीं से पढ़वायेंगे। उसके बाद विद्यार्थियों को एकक या दलगत रूप से प्रत्येक विशेषण शब्द, जैसे- अच्छा, मधुर, बारह, अच्छी, बढ़िया, मोहित, कई आदि को लेकर ये क्यों विशेषण शब्द हैं और किस प्रकार के विशेषण हैं, पूछकर समझाने की प्रयास करेंगे।

देखा गया है कि इस विधि को अपनाकर सामान्य व्याकरण के अंग विशेषण के बारे में शिक्षण देने में अध्यापक को अधिक सफलता प्राप्त हुई है। हमारे हिन्दी अध्यापकगण भी इसी प्रकार क्रिया-कलापों तथा परियोजना द्वारा सही रूप से विशेषण का ज्ञान देने में समर्थ हो सकते हैं।

आओ, हम सोंचे :

⇨ क्या इस तरह की प्रश्नोत्तर शैली से दीया गयी शिक्षा अधिक प्रभावशाली और महत्वपूर्ण है ?

⇨ भाषा-अध्ययन की दृष्टि से विशेषण का महत्व क्या है ?

⇨ हिन्दी भाषा लेखन में इसकी भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है ?

⇨ प्रायोगिक अर्थात् व्यावहारिक दृष्टियों से भाषा-ज्ञान कराने में इससे कैसे सहायता पहुँच सकती है ?

क्रिया-कलाप-5 :

प्रस्तुत पाठ के अनुशीलन के सहारे डायरी लेखन और भ्रमणमूलक वर्णन से भारत के महत्वपूर्ण विख्यात स्थलों, मंदिरों, ऐतिहासिक इमारतों आदि के बारे में प्राप्त ज्ञान की जाँच कर सकते हैं।

प्रश्न 1: पुरी नगर क्यों प्रसिद्ध है ?

प्रश्न 2: दिल्ली के प्रमुख दर्शनीय स्थलों के नाम लिखो।

प्रश्न 3: मुंबई में बच्चों ने क्या-क्या देखा ?

प्रश्न 4: ताजमहल क्यों विख्यात है ?

प्रश्न 5: पेठा कहाँ की मशहूर मिठाई है ?

प्रश्नोत्तर शैली से भाषा-ज्ञान, लेखन, पठन, श्रवण और बोलने की दक्षता बढ़ेगी और उनमें होनेवाली गलतियों को अध्यापक सुधार देंगे तो उनमें भी सुधार होंगे।

सारांश :

प्रस्तुत संसाधन-इकाई 'भारत दर्शन' के माध्यम से निबंधात्मक पाठ का श्रवण, पठन, कथन और लेखन संबंधी सम्यक् ज्ञान प्राप्ति पर आलोकपात किया गया है। साथ ही मूल के पाठ अध्ययन द्वारा विद्यार्थी भ्रमण के महत्व को समझ पाएंगे।। मूल पाठ के अधिगम के द्वारा डायरी लेखन की सामान्य जानकारी मिलेगी। व्यावहारिक व्याकरण ज्ञान के अंतर्गत हमें विशेषण शब्दों का ज्ञान भी मिलेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

इस प्रकार व्याकरणिक शुद्धता का ज्ञान कराने के लिए अध्यापक निम्नलिखित पुस्तकों की मदद ले सकति है।

★ आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना

★ मानक हिन्दी व्याकरण और रचना

★ सरस्वती मानक व्याकरण

★ **TESS India Metarials**

★ **E Pathshala Metarials**

★ **Learning Outcomes at the Elementary Stage by SCERT.Assam.**

विस्तारित गतिविधियाँ :

★ अध्यापक विद्यार्थियों को कम से कम तीन हिन्दी या अपनी भाषा में लिखे हुए भ्रमण-वृतान्तपरक लेख जो उन्हें पसन्द हों-संग्रह करने के लिए निर्देश देंगे।

★ अध्यापक विद्यार्थियों को हिन्दी के अन्य प्रसिद्ध लेखकों के भ्रमण-वृत्तान्तों का संग्रह करके उन्हें पढ़ने और उन पर चिंतन-मनन करने के लिए कहेंगे।

सुदृढ़ीकरण :

★ हिन्दी में लिखित किसी लेख, कहानी आदि पढ़कर विशेषण शब्दों को रेखांकित करने के प्रयास करने से विशेषण संबंधी ज्ञान बढ़ेगा।

★ स्तरीय व्याकरण ग्रंथ की मदद से भी विशेषण संबंधी ज्ञान बढ़ाया जा सकेगा।

प्रश्न-भण्डार :

(क) 'भ्रमण शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग है।' इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखो।

(ख) डायरी लिखने के क्या-क्या लाभ हैं ?

(ग) 'गेटवे आफ इंडिया' कहाँ है ?

(घ) भारत के दिए गए मानचित्र में निम्नलिखित जगहों को चिह्नित करो:

गुवाहाटी, नई दिल्ली, हावड़ा, पुरी, मुंबई, आगरा

प्रस्तुतकर्ता : **डॉ० अन्जलि काकति,** वरिष्ठ व्याख्याता, हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उत्तर गुवाहाटी

पुनरीक्षण : **डॉ. अच्युत शर्मा,** एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय

अधिगम के परिणाम के कमजोर क्षेत्रों के सुधार हेतु प्रस्तुत मुक्त शैक्षिक संसाधन (हिन्दी)

कक्षा :- आठवीं **विषय :- हिन्दी[3]**

विगत गुणोत्सव के दौरान विद्यार्थियों में कहानी के श्रवण, पठन, कथन और लेखन के सन्दर्भ में कमी पायी गयी। साथ ही शुद्ध वाक्य- लेखन की दृष्टि से भी व्याकरणिक ज्ञान की कमी देखी गयी। इन कमियों के दूरीकरण हेतु यह संसाधन-इकाई प्रस्तुत है।

अधिगम के परिणाम :-

- प्रस्तुत संसाधन-इकाई के अधिगम से हमें हिन्दी गद्य साहित्य की एक अन्यतम रोचक विधा 'कहानी' की सम्यक् जानकारी प्राप्त होगी।
- कहानी कैसे सुनी जाए, कैसे पढ़ी जाए, कैसे कही जाए और कैसे लिखी जाए-इन सबका समुचित ज्ञान हमलोगों को इस संसाधन-इकाई को सही तरीके से सीखने-समझने से मिल जाएगा।

अधिगम के परिणाम के उप-क्षेत्र :

- इस संसाधन-इकाई के जरिए हमें कहानी के श्रवण, पठन, कथन और लेखन संबंधी सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति के अलावा इस कला से जुड़ा हुआ आनन्द भी मिलेगा। सम्बद्ध कहानी से नैतिकता और सदाचार का पाठ भी प्राप्त होगा।
- मानव जीवन पर पड़ने वाले कहानी के प्रभाव की अनुभूति भी हमें होगी।
- सन्दर्भित कहानी के जरिए शुद्ध वाक्य-लेखन संबंधी व्यवहारगत व्याकरणिक ज्ञान से भी हमलोग परिचित हो सकेंगे।

सन्दर्भ पाठ :

नौवाँ पाठ - 'जैसे को तैसा' (कहानी), महीना : जून

प्रस्तावना :

असम के अहिन्दी माध्यम के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में सरकारी त्रि-भाषा सूत्र के अनुसार कक्षा छठी से लेकर आठवीं तक तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी का पठन-पाठन होता है। वस्तुत: इस मुक्त अधिगम संसाधन (हिन्दी) की प्रस्तुति के पीछे शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या नीति-2005 तथा असम सरकार द्वारा आयोजित विगत गुणोत्सव के परिणाम का आधार है। किस्से-कहानियों का प्रचलन हमारे समाज में अत्यन्त प्राचीन काल से ही रहा है। परन्तु कलात्मक कहानियाँ आधुनिक काल में ही रची गयी हैं। कहानी वस्तुत : मनुष्य के यथार्थ जीवन की काल्पनिक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति हुआ करती है। इससे हमें भरपूर आनन्द के साथ-साथ जीवन के लिए उपयोगी नैतिकता एवं सदाचार की शिक्षा भी मिलती है। हमें इन बातों की जानकारी होनी चाहिए कि कहानी किस प्रकार से सुनी-सुनायी जाती है, पढ़ी-पढ़ायी जाती है, लिखी-लिखायी जाती है, इत्यादि। इन्हीं बातों को इस संसाधन-इकाई में 'जैसे को तैसा' शीर्षक पाठ के सन्दर्भ में रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई को सीखने-सिखाने का महत्व :

कहानी बच्चों के लिए मनोरंजन का साधन होने के साथ ही यह नैतिकता का पाठ भी पढ़ाती है। बड़ों के मुँह से कहानी सुनना बच्चों को अच्छा लगता है। स्वाभाविकतया इसके प्रति विद्यार्थी की रुचि और ध्यान रहते हैं। कहानी सुनकर विद्यार्थी श्रवण में दक्षता प्राप्त करते हुए शुद्धता से पढ़ने का ज्ञान प्राप्त करते हैं। शुद्ध श्रवण से शुद्ध पठन की

सम्प्राप्ति होती है और मनोरंजक तथा ज्ञान देनेवाली बच्चों की उपयोगी कहानी से वे इसके श्रवण, पठन के अलावा इसपर रचनात्मक दक्षता भी प्राप्त कर सकते हैं। इस तरह प्रस्तुत संसाधन इकाई से विद्यार्थियों के साथ हम सभी कहानी के पठन, श्रवण और लेखन का महत्व समझ पायेंगे।

प्रस्तुत संसाधन इकाई से हम क्या-क्या सीख पायेंगे ? :

- ⇨ कहानी के पठन, श्रवण, कथन और लेखन के कौशल का ज्ञान मिलेगा।
- ⇨ कहानी के श्रवण और पठन आनंददायी सीखन-शिक्षण में कैसे उपयोगी हैं-यह बात मालूम होगी।
- ⇨ कहानी के जरिए नैतिकता और सदाचार की सीख प्राप्त करेंगे।
- ⇨ व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध वाक्य-लेखन के सन्दर्भ में ज्ञान प्राप्त केरेंगे।
- ⇨ पाठ आधारित सामान्य व्याकरण के अंतर्गत क्रिया के बारे में सामान्य ज्ञान भी हमें मिलेगा।
- ⇨ कहानी, किस्से आदि के लेखन और इनके सृजन हेतु विद्यार्थियों के साथ हम सब प्रेरित होंगे।

प्रस्तुत संसाधन इकाई के लिए शिक्षक क्या-क्या करेंगे ? (परिकल्पना) :-

- ⇨ अध्यापक नियमित रूप से कक्षा में विद्यार्थियों के उपयोगी कहानी, किस्से आदि सुनायेंगे। इनमें निहित भाव और संदेश को उन्हें समझायेंगे और लिखवायेंगे भी।
- ⇨ शुद्धता से पाठ्य पुस्तक में निर्धारित कहानी का पठन-पाठन करेंगे, साथ ही विद्यार्थियों से भी इसका वाचन करवायेंगे। आवश्यक व्याख्या देंगे, प्रश्न पूछेंगे और उनका हल बतायेंगे।
- ⇨ विद्यार्थियों से अध्यापक सहजता से प्राप्त छोटी-छोटी कहानियों का संग्रह करवायेंगे और संगृहीत कहानियों को वे अन्य विद्यार्थियों के सामने कह कर सुनायेंगे।
- ⇨ अध्यापक किसी विषय, घटना या नैतिकता की सीख सम्बन्धी विषय या बात पर विद्यार्थियों से कहानी लेखन का अभ्यास करायेंगे। इसके लिए अध्यापक आवश्यक मार्ग-दर्शन करेंगे।
- ⇨ विद्यार्थियों में कहानी-लेखन प्रतियोगिता का आयोजन करेंगे। ऐसा करने पर कहानी-लेखन के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी, चिंता और कल्पना का विकास होगा। उनकी सर्जनात्मक दक्षता बढ़ेगी।
- ⇨ व्याकरण के ज्ञान देने के लिए आवश्यक चार्ट, ओडिओ, वीडिओ आदि कक्षा में यथासंभव उपलब्ध करायेंगे।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए आवश्यक शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ :

क्रिया-कलाप -1 :

कक्षा में कहानी-कथन शिक्षण का एक सशक्त माध्यम है। यह कहानी मजेदार, प्रेरणादायी तथा नैतिक शिक्षा की धूरी भी हो सकती है। ये श्रोताओं यानी विद्यार्थियों को दैनिक जीवन से दूसरी काल्पनिक दुनिया में ले जायेंगी। उनके मन में नए

विषयों के प्रति चिंतन को जगायेंगी तथा भिन्न समस्याओं और अनुभवों को कल्पना और भावना के मिश्रण से मौखिक या लिखित अभिव्यक्ति देने में सहायक होंगी।

पहले अध्यापक प्रस्तुत कहानी 'जैसे को तैसा' की समुचित कथा को श्रुति-मधुरता के साथ विद्यार्थियों को सुनायेंगे और समझायेंगे। विद्यार्थी एकाग्रता के साथ उसे ध्यानपूर्वक सुनेंगे। कहानी में निहित नैतिक शिक्षा

को वे भली–भाँति इसके तात्पर्य सहित विद्यार्थियों को बतायेंगे। इसके साथ उदाहरण के लिए अन्य आकर्षक कहानी भी यथावश्यक सुनायेंगे।

इसके बाद अध्यापक शुद्ध लय, गति, उच्चारण के साथ प्रस्तुत कहानी को पढ़ेंगे और विद्यार्थी इसे ध्यानपूर्वक सुनेंगे। इसके बाद शिक्षक विद्यार्थियों से इसका मौन वाचन भी करायेंगे। फिर, उनको दलों में विभाजित करते हुए वही पाठ कक्षा में वे पुन: उन्हीं से पढ़वायेंगे। बाकी बच्चे ध्यान पूर्वक उसे सुनेंगे।

आइए, हम सब सोचें :

★ विद्यार्थी प्रस्तुत कहानी या उदाहरणार्थ कथित कहानी को ध्यान और एकाग्रता से सुन रहे हैं या नहीं ?

★ कहानी सुनकर उन्हें आनन्द की प्राप्ति हो रही है या नहीं ?

★ कहानी को पठन की शुद्धता के साथ वे पढ़ पाये हैं या नहीं ?

★ कहानी की अंतनिर्हित नैतिक शिक्षा को वे समझ पाये हैं या नहीं ?

क्रिया–कलाप –2 : क्षेत्र अध्ययन– 1:

मृगेन हाजरिका गुवाहाटी के एक उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक हैं। वे कैसे अपने विद्यार्थियों को कहानी पढ़ाते हैं, उसी का वर्णन यहाँ प्रस्तुत है–

वे कहानी पढ़ाने के लिए अपनी दादी से सुनी कहानियों के कुछ कौशलों का प्रयोग करके विद्यार्थियों को कहानी सुनाते हैं। इसतरह नियमित रूप से अध्यापक द्वारा कही गई कहानियों को सुनकर वे आनंद पाते हैं। कुछ शिक्षक स्मृति से जुड़ी हुई कहानी को कहने में रुचि रखते हैं, कुछ किताबों से पढ़कर सुनाना अच्छा पाते हैं। लेकिन यह अध्यापक अपने काल्पणिक श्रोताओं (विद्यार्थियों) के सामने एक विशेष कौशल का प्रयोग करके कहानी सुनाने की चेष्टा करते हैं। वे कहानी के विभिन्न चरित्रों को आवश्यकतानुसार अलग–अलग आवाजें देकर विभिन्न अनुभवों सहित, जैसे– सुख, दुख, क्रोध, आश्यर्य आदि की अभिव्यक्ति को शारीरिक भंगिमा का व्यवहार करके कहानी सुनाते हैं। उन्हें लगाता है– इसतरह कहानी कथन से विद्यार्थी को आनंद मिलता है और कहानी को भी वे इसतरह से समझ लेते हैं। साथ ही कहानी बोलते समय अपने विद्यार्थियों का निरीक्षण करते–हुए उसे उन्होंने समझा है या नहीं या उसके प्रति वे आग्रही हैं या नहीं–उसे भी जान लेते हैं।

देखा गया कि–इस अध्यापक द्वारा किये गये कहानी–कथन या कहानी सुनाने के तरीके ने विद्यार्थियों को बहुत प्रभावित किया और वे कहानी–कथन में सफल हुए। अत: हम हिन्दी शिक्षकगण भी इस पद्धति को अपनाकर विद्यार्थियों को कहानी कथन की सीख दे सकते हैं।

आइए, हम सब सोचें :

⇨ अध्यापक का अपनी आवाज में भिन्नता लाने का कौशल कितना महत्वपूर्ण है ?

⇨ उनका शारीरिक भंगिमाओं का प्रयोग आवश्यकता है या नहीं ?

⇨ विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं पर इसका प्रभाव कितना महत्वपूर्ण है।

क्रिया-कलाप -3 : क्षेत्र अध्ययन -2 :

अरुण बरा, नलबारी के एक उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक हैं। विद्यार्थियों द्वारा समाज के व्यक्तियों से कहानियों का संग्रह कर उन कहानियों का कैसे अन्यों के साथ उपयोग किया जाता है उसके बारे में अरुण बरा जी का अनुभव यहाँ प्रस्तुत है।

उन्होंने अपने विद्यार्थियों को अपने-अपने परिवार या पड़ोसियों से कहानी सुनने के लिए कहा। इसके लिए उन्हें एक हफ्ते का समय दिया। उनमें से दो या तीन विद्यार्थियों को शारीरिक भंगिमाओं के साथ उन कहानियों को कक्षा में सुनाने के लिए कहा।

पहले वे कहानी को अपनी मातृभाषा में बोले और अध्यापक के सहयोग तथा प्रोत्साहन से वे फिर हिन्दी में भी बोलने लगे। स्थानीय भाषाओं से प्राप्त कहानियों को अध्यापक ने स्वयं हिन्दी में अनुवाद किया और विद्यार्थियों से भी करवाया। इसतरह वे अनुवाद के जरिए विद्यार्थियों में लेखन-कौशल का विकास करने में समर्थ हुए। अत: हिन्दी अध्यापकगण भी यह कौशल अपना सकते हैं।

आइए, हम सब सोचें :

- ★ विद्यार्थियों को स्थानीय स्रोतों से प्राप्त कहानियों को अपनी मातृभाषा और हिन्दी भाषा में बोलने के लिए प्रेरित करने का क्या महत्व है ?
- ★ विद्यार्थियों में उन कहानियों के आधार पर परवर्ती समय में क्या-क्या परिवर्तन आ सकते हैं ?
- ★ कहानी-कथन (कक्षा में) में उन्हें कैसे सहायता पहुँच सकती है ?

क्रिया-कलाप -4 : प्रस्तुत पाठ का अनुशीलन :

प्रस्तुत पाठ के अनुशीलन के सहारे कहानी सम्बंधी प्रश्नों का निराकरण :-

एक चुना हुआ पाठ्यांश (पाठ-'जैसे को तैसा') :

''महाराज, सभी धोबियों को बुलाने की कोई आवश्यकता नहीं है। मेरे पड़ोस में जो धोबी रहता है वह बहुत साफ धुलाई करता है। वह हमारे हाथियों की धुलाई के लिए उपयुक्त है।''

बादशाह अकबर कुम्हार की योजना समझ गए और उन्होंने अपने सेवकों से कहा, ''जल्दी जाओ और धोबी को पकड़ कर ले आओ।''

धोबी को बुलाकर हाथियों को साफ करने के लिए कहा गया। धोबी ने कुछ हाथियों को सारा दिन रगड़-रगड़ कर साफ किया परंतु वे सभी काले के काले ही रहे। शाम को थका हुआ धोबी घबरा गया। उसे बादशाह के क्रोध से डर लग रहा था क्योंकि साफ करने के बावजूद हाथी अभी तक काले ही थे। धोबी यह भी समझ चुका था कि यह सब कुम्हार की योजना थी जो उसे सबक सिखाना चाहता था। वह सहायता के लिए तुरंत बीरबल के महल की ओर चल पड़ा।

प्रश्न 1: धोबी क्यों घबरा गया था ?

प्रश्न 2: क्या कुम्हार अपनी योजना में कामयाब हुआ ?

प्रश्न 3: धोबी सहायता के लिए किसके महल की ओर चल पड़ा था ?

प्रश्न 4: 'जैसे को तैसा' कहानी से तुम्हें क्या सीख मिली ?

प्रतिफलन :

- ⇨ कहनी को पढ़कर विद्यार्थी प्रश्नों का उत्तर तैयार करेंगे। (लिखित या मौखिक)
- ⇨ लिखने और बोलने में शुद्धता और गलतियाँ नजर आयेंगी। उनमें होनेवाली गलतियों को सुधार देने से उनमें सुधार होंगे।
- ⇨ इस प्रकार विद्यार्थी प्रश्नों के जवाब दूढ़ने के लिए मन से पूरे पाठ को पढ़ेंगे और कक्षा में जुड़े रहेंगे।
- ⇨ अपनी ज्ञान-बुद्धि से सही-गलत का निर्णय कर पायेंगे।

पाठ-आधारित व्याकरण-शिक्षण :

चूँकि तीसरी भाषा हिन्दी के विद्यार्थियों के लिए आठवीं कक्षा में व्याकरण की अलग पाठ्य पुस्तक की व्यवस्था नहीं हैं, अत: सभी पाठों के साथ व्याकरण-शिक्षण की व्यवस्था है। शिक्षक-शिक्षिकागण अपने अनुभव से विद्यर्थियों के व्याकरणिक ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास करें।

इस पाठ में भाषा-अध्ययन की दृष्टि से रचना के आधार पर वाक्यों के प्रकार पर ज्ञान देने का प्रयास किया जा रहा है।विगत गुणोत्सव के दौरान 'शुद्ध वाक्य-लेखन' ही कमजोर क्षेत्र रह गया हैं। अत: अध्यापक को वाक्यों के भेद (रचना के आधार) पर विशेष रूप से सिखाना और समझाना पड़ेंगा।

इसके लिए अध्यापक पाठ में प्रयुक्त तीनों प्रकार के वाक्यों को छाँटकर क्रिया-कलाप के रूप में उन्हें सिखाने का प्रयास करेंगे, जैसे-

अभ्यास तालिका-1 :

1. राम पुस्तक पढ़ता है।
2. धोबी घबड़ा गया।
3. कुम्हार को अधिक गुस्सा आया।

अध्यापक लिखित वाक्यों को सही उच्चारण से पढ़ेंगे और विद्यार्थी ध्यान से सुनेंगे। इन वाक्यों में 'पढ़ता है', 'घबड़ा गया', 'गुस्सा आया' आदि मुख्य क्रियाएँ हैं। आकार में छोटे-बड़े होते हुए भी रचना की दृष्टि से इनमें समानता है। ऐसे वाक्यों को **सरल वाक्य** कहा जाता है।

अभ्यास तालिका-2 :

1. यदि वह झूठ नहीं बोलता तो दंड नहीं पाता।
2. हम गए और तुम आए।
3. सुषमा बीमार है इसलिए आज स्कूल नहीं गई।

अध्यापक लिखित वाक्यों को सही उच्चारण से पढ़ेंगे और विद्यार्थी ध्यान से सुनेंगे। इन वाक्यों में 'तो, और, इसलिए, आदि योजक शब्द प्रयुक्त हैं। योजकों की सहायता से जुड़े हुए ऐसे वाक्यों को **संयुक्त** वाक्य कहते हैं।

अभ्यास तालिका-3 :

1. मैंने सुना है कि वह यहाँ पहुँच गया है।
2. जो मेहनत करता है, उसे अवश्य सफलता मिलती है।
3. जब तुम स्टेशन पहुँचे तब मैं घर से चला।

अध्यापक लिखित वाक्यों को सही उच्चारण से पढ़ेंगे और विद्यार्थी ध्यान से सुनेंगे। इन तीनों वाक्यों में एक से अधिक उपवाक्य हैं- इनमें से एक प्रधान उपवाक्य और अन्य गौण उपवाक्य हैं। इन उदाहरणों में रेखांकित अंश गौण उपवाक्य हैं और दूसरे अंश प्रधान उपवाक्य हैं। ऐसे वाक्यों को **मिश्र** वाक्य कहते हैं।

अध्यापक इस प्रकार तीनों प्रकार वाक्य अभ्यास तालिका के सहारे नियमित के रूप से सिखायेंगे। विद्यार्थी ध्यान से समझेंगे।

इन वाक्यों को देखकर प्रत्येक भेद के सन्दर्भ में विद्यार्थी दो-दो वाक्य बनायेंगे और शिक्षक-शिक्षिका को दिखायेंगे।

इसी प्रकार सही वाक्य-लेखन के ज्ञान प्राप्त होने के बाद रचना की दृष्टि से वाक्य शुद्ध है या अशुद्ध, पकड़ पायेंगे और स्वयं भी शुद्ध वाक्यों का प्रयोग कर सकेंगे।

सारांश :

प्रस्तुत संसाधन-इकाई में विद्यार्थियों से कहानी लेखन, पठन, श्रवण, कथन आदि के सम्बन्ध में आवश्यक आलोकपात किया गया है। विद्यार्थियों के स्तर तथा आयु के उपयोगी कहानी कथन और लेखन के अभ्यास हेतु पहल की गई है। कहानी के कथन और लेखन के समय इसके लिए जरूरी अभिव्यक्ति के कौशल या तरीके भी वे प्राप्त करेंगे, वे उसमें समर्थ होंगे। अपनी भाषा और हिन्दी भाषा तथा व्यक्ति और समाज के बीच संम्बध-स्थापन के कौशल की प्राप्ति में भी यह सहायक होगा। पाठ आधारित व्याकरण का ज्ञान भी प्राप्त हो तथा उसका सही प्रयोग करने में भी विद्यार्थीगण समर्थ होंगे।

संदर्भ ग्रन्थ-सूची :

★ **TESS India Metarials.**

★ **E Pathshala Metarials.**

★ **Learning Outcomes at the Elementary Stage by SCERT.Assam.**

★ आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना

★ मानक हिन्दी व्याकरण और रचना

★ सरस्वती मानक व्याकरण

सुदृढ़ीकरण :

⇨ कोई भी छोटी-मोटी बात या विषय लेकर बच्चे सहज और सरल कहानी लिखें-इसका निर्देश अध्यापक देंगे। ऐसा करने से कहानी विधा पर विद्यार्थियों की पकड़ और मजबूत होगी।

⇨ प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद- जैसे कहानीकारों की छोटी-छोटी कहानियों का संग्रह करके विद्यार्थी पढ़ेंगे।

⇨ विद्यार्थी कहानियाँ पढ़कर उनसे मिलनेवाली सीखों की सूची बनायेंगे।

⇨ कहानियाँ पढ़कर जीवन को समझने का प्रयास करेंगे।

विस्तारित गतिविधियाँ :

आपकी कक्षा के विद्यार्थी कम से कम चार या पाँच हिन्दी या किसी भी भाषा में लिखी गयी छोटी और सरल कहानियों को चुने और उनका संग्रह करें। इसके लिए अध्यापक उन्हें आवश्यक निर्देश देंगे।

प्रश्न-भण्डार :

(क) कहानी और कविता दोनों में से आपको क्या पसंद है ? लिखिए।

(ख) नैतिकता की सीख कहानी में क्यों जरूरी है ?

(ग) अपनी पसन्द के अनुसार एक हिन्दी कहानी लिखिए।

(घ) कहानी में पात्रों की क्या भूमिकाएँ रहती हैं ?

(ङ) एक सफल कहानी में किन बातों का होना जरूरी है ?

प्रस्तुतकर्ता : **डॉ० अन्जलि काकति,** वरिष्ठ व्याख्याता, हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उत्तर गुवाहाटी

पुनरीक्षण : **डॉ. अच्युत शर्मा,** एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय